मातेश्वरी विशेषांक

॥ सुख शांति समृद्धि ॥

वर्ष : 3 हिन्दी मासिक ◆ जूलाई 2015 संपादक : जीतु सोमपुरा ◆ विशेष मूल्य 10 रुपये

मातेश्वरी यज्ञमाता जगदम्बा सरस्वती

ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग के समन्वय का सर्वोत्तम दृष्टांत

राधे कैसे बनी मम्मा?

अमृतसर से आबू की दिव्य यात्रा

मम्मा मातेश्वरी की महिमाओं का आध्यात्मिक रहस्य

मम्मा मातेश्वरी विशेषांक

ओम् शांति

निराकार परम्पिता शिव परमात्मा और साकार ब्रह्मा बाबा स्थापित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के निर्माण में यज्ञमाता जगदम्बा सरस्वती जी की भूमिका क्या है? मम्मा को प्रथम विश्वमाता – यज्ञमाता – जगदम्बा सरस्वती – मातेश्वरी जैसे अनेक विभूषित नामों से क्यों संबोधित किया जाता हैं? ब्रह्मा बाबा द्वारा उच्चारित परमात्माशिव के महावाक्यों को जीवन में कैसे धारण करें? प्रथम विश्वमाता यज्ञमाता जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) के जीवन से कब, क्यों, कैसें प्रेरणा ले?

मॉडर्न राधे से मातेश्वरी तक की दिव्य जीवन यात्रा के अनेक प्रेरणात्मक प्रसंग रुपी स्टेशन पर हमारे परिवर्तन की गाड़ी कहां रुकी हैं?कैसे आरंभ होगी?कब मोड़ लेगी? ऐसे कई प्रश्नों के उत्तर आपको सुख शांति समृद्धि के इस विशेषांक में प्राप्त होंगे। बड़े–बड़े शास्त्रों में से आपको जो प्रेरणा मिल सकती हैं वो प्रेरणा मम्मा ने व्यक्त किये हुए विचारों से मिलेगी ऐसा मुझे विश्वास हैं। ओम् शांति

पूर्णता की यात्रा

राजयोगी ब्रह्माकुमार भ्राता करुणा जी

परमपिता शिव परमात्मा ने साकार ब्रह्मा बाबा के द्वारा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की। ब्रह्माबाबा ने ज्ञान यज्ञमाता जगदम्बा सरस्वती के द्वारा विश्व निर्माण के लिये ब्रह्माकुमारी बहेनो और ब्रह्मकुमार भाईयों को शिक्षित किया। मम्मा की दृष्टि में इतनी दिव्य शक्ति थी कि उनकी दृष्टि से सामने वाले की आध्यात्मिक चेतना जाग जाती थी। उन्होंने ने अपूर्णता से पूर्णता की ओर ले जाने की यात्रा के संबंध में सब को प्रोत्साहित किया। छोटा हो या बड़ा हर एक को समान भाव से सम्मान देते हुए योग शिखाकर योग्य बनाया। वे कभी भी किसी की कमीया याद नहीं रखती थी। सबको प्रभू की पहचान करवाई इसलिये वह प्रथम विश्व माता है।

ऊँ शांति : बी. के. मुन्नी बहन जी (आबू)

प्रथम विश्व माता 'मम्मा' यज्ञमाता जगदम्बा सरस्वती

लौकिक जीवन परिचय के अंश

ब्रह्माकुमारी दादी शान्तामणि जी : यज्ञमाता जगदम्बा सरस्वती जी (मम्मा) का लौकिक नाम राधे, पिता का नाम पोकरदास और माता का नाम रोचा था। जन्म सन् 1919 में अमृतसर में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा बम्बई हुई थी। उनके अमीर पिताजी की व्यापार में घाटा होने की वजह से हृदयाघात से मृत्यु हुई। छोटी मॉडर्न राधे अपने परिवार के साथ सिन्ध हैदराबाद में अपने नानी के वहॉ रहने आ गई। अंग्रेजी शाला में मैट्रिक तक पढ़ाई की। हमारी

मॉ और मम्मा की मॉ सगी बहने थी। हमारी एक दूसरी मौसी के पति का भी देहान्त हो गया था। वह भी अपने पियर घर अर्थात मम्मा के घर आ गई। उस घर में दो अपने पतियों को खो कर तीन बहनें अपने बाप को खोकर बहुत दुःखी थी। रोया करती थी। शान्ति के लिये सत्संग को यहॉ वहॉ जाती थी। एक दिन बाबा के वहां जाना हुआ। बाबा से ज्ञान सुनने के बाद दुखी मातायें खुश हो गई। अगले दिन राधे को भी सत्संग में लेकर गई। प्रथम बार बाबा ने राधे को देखा उसी पल बाबा को लगा की यह मेरी वारिस बेटी हैं और राधे को भी उसी क्षण महसूस हुआ कि यह मेरा बहुत काल से बिछुड़ा हुआ पिता है। इस तरह राधे का सत्संग में आना जाना आरंभ हुआ।

जीवन का फैसला एक पल में

17 वर्ष की राधे की शादी की बात चल रही थी। एक दिन बाबा ने राधे से पूछा, "राधे, तुमको पितांबर से शादी करनी है या सूट–बूट वाले से?इस ज्ञान से स्वयं कल्याण और विश्व का कल्याण करना है या शादी करके घर संभालना है? सोच–विचार करके मुझे बताना।" बाबा ने राधे को 24 घंटे का समय दिया था जवाब देने के लिये लेकिन राधे ने एक पल में ही भविष्य जीवन का फैसला ले लिया और उसी पल बाबा को उत्तर दिया, "बाबा, मैं गिरधर गोपाल की वही राधे हूँ, मैं इस ज्ञान मार्ग में चलकर विश्व का कल्याण करुँगी।" उसी दिन से लेकर बाबा राधे के ऊपर ज्ञान की वर्षा बरसाने लगे और ज्ञान का कलश भी रख दिया।

राधे से ऊँ राधे

राधे सत्संग में ऊँ की ध्वनि बहुत अच्छी करती थी। आने वाले सब ऊँ की ध्वनि से बहुत आकर्षित होते थें। इसके कारण सब उसको ऊँ राधे कहने लगे। बाबा भी ऊँ राधे कहने लगे। इस तरह,

राधे का नाम 'ऊँ राधे' हो गया। ऊँ राधे बहुत सुन्दर गाती थी। जब उसने 'ऊँ मंडली में आकर क्या देखा और क्या पाया' यह गीत लिख कर गाया तो बाबा बहुत प्रभावित हुए। बाबा रोज उनको एक गीत लिखकर देते थे और ऊँ राधे उसे क्लास में गाकर सुनाती थी। जब ऊँ राधे गीत सुनाती थी तो सुनने वाले बहुत खुश होते थें और उनके दिल पर अमिट छाप लग जाती थी। धीरे–धीरे सत्संग बढ़ता गया। उसमें मातायें भी आती थीं तो कन्यायें भी आती थीं। जो कन्यायें थीं उनको तो कोई समस्या न थी, जो गृहस्थी थीं और जिनके पति व्यापार्थ विदेशों में गये थे वे आये तो घरों में पति–पत्नि के झगड़े होने लगे। पति कहने लगे कि हमें विकार रुपी विष चाहिए, पत्नी कहने लगी कि हम ने तो परमात्मा को वचन दिया है कि हम पवित्र रहेंगे, हम विष दे नहीं सकती। तो उनके पति द्वारा

ऊँ शांतिः बी. के. नलिनी बहन जी (घाटकोपर, मुंबई)

विरोध प्रदर्शन, पिकेंटिग आदि शुरु हो गयी। लेकिन ऊँ राधे सत्संग संभालने का अपना कार्य निश्चिन्त और अचल होकर करती रही। यह सन् 1936 की बात। कोई पूछता था तो बाबा कहते थे कि मैं तो कुछ नहीं करता। यह सत्संग तो उन कन्याओं–माताओं का है। सत्संग वो कराता है। ऊपर वाला आता है, बोलकर चला जाता है। ऊपर वाला जैसे कहेगा मैं वैसे करने वाला हूँ। मुझे तो कुछ भी नहीं पता। ऐसे कह कर सबको ऊँ राधे की तरफ़ भेज देते थे। हमेशा बाबा ऊँ राधे को आगे रखते थे।

ऊँ राधे बनी मम्मा अर्थात मातेश्वरी

ब्रह्माकुमारी दादी निर्मल शान्ताजीः "बाबा ने ही मुझे मम्मा के पास रखा था। मम्मा ही मेरी संभाल करती थी। मैं छोटी होने के कारण, बाबा ने सोचा होगा कि इसको लौकिक माँ की याद न आये इसलिये मम्मा के पास रखा। बाबा ने मुझे एक बार कहा, तुम्हारी पालना ऊँ राधे करती हैं इसलिये यही तुम्हारी मम्मा हैं।तब से मैं ऊँ राधे को मम्मा कहने लगी। तब तक सब उनको ऊँ राधे ही कहते थें। मैंने ही सबसे पहले मम्मा नाम से पुकारना आरंभ किया। उसके बाद सब ऊँ राधे को मम्मा कहने लगे।"

सेवा करोगे तो मेवा मिलेगा

मुझे साक्षात्कार तो नहीं होता था मगर मैं जब भी मम्मा को देखती थी तो मुझे लगता था कि यह लक्ष्मी ही बनेगी, यह सतयुग की महारानी है। मैं सेवा नहीं करती थी, शहजादी जैसे रहती थी। मम्मा मुस्कुराते हुए कहती थी, जाओ बच्ची, उनको ज्ञान समझाओ। सेवा करोगे तो मेवा मिलेगा। जाओ उनको बाबा का ज्ञान सुनाओ। इस प्रकार मम्मा ने मुझे ज्ञान समझाना सिखाया, सेवा करना सिखाया।

ऊँ शांति : बी. के. योगिनी बहन जी (विलेपार्ले, मुंबई)

मम्मा, हम क्या पुरूषार्थ करें?

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी जानकी जी

एक बार मम्मा से किसी ने पूछा था, मम्मा आप मन को कैसे शान्त रखती हैं? तब मम्मा ने कहा, यह मन तो हमारी छोटी बेबी है, मैं उसको कह देती हूँ कि अभी तुम शान्त रहो, जब ज़रुरत पड़ेगी तब मैं तुमको बुला लुँगी, वह चुप बैठ जाता है। ऐसे मम्मा मनजीत थी। यह कराची की बात है, मम्मा ऑफिस में बैठी थी तो मैंने जाकर पूछा, "मम्मा हम क्या पुरुषार्थ करें?" तब मम्मा ने कहा, "तुम सदैव समझो यह मेरी अन्तिम घड़ी है।" वो दिन और आज का दिन मम्मा का वो मंत्र मुझे भूला नहीं है हर घड़ी अन्तिम घड़ी है और मुझे बाबा की याद में रहना है।

मातेश्वरी ने आध्यात्मिक कर्म-क्षेत्र पर सफल होना सिखाया

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी

सारा संसार जिसे कामधेनु, आद्या, आदिशक्ति, सरस्वती और अन्य अगणित नामों से पुकारता है और एक झलक पाने के लिये वर्षों तप, जप, भक्ति और आराधना करता है, कितनी आश्चर्यचकित और आनन्दित करने वाली बात है कि वहीं सरस्वती मॉ साक्षात् रुप में इस धरती पर चली तथा अपने कमल हस्तों से हजारों वत्सों को थपथपाया, दृष्टि द्वारा स्नेह और योग के प्रकम्पन दिये, ज्ञानयुक्त मधुर बोल से उनके आत्मन् को सींचा, शिशुवत् पाला-पोषा और सर्वशक्तियों का चुग्गा देकर आध्यात्मिक कर्म-क्षेत्र पर सफल होना सिखाया।

ऊँ शांति : बी. के. दिव्या बहन जी (बोरीवली, मुंबई)

भारत की नारी की वह शान थी

राजयोगी भ्राता ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्रजी

यज्ञ की स्थापना में मातेश्वरी जी की शिरोमणी पवित्रता, घोर तपस्या, अटूट निश्चय इत्यादि की तो जितनी महिमा की जाये उतनी कम है। जिन्होंने उनके मुख–मंडल को देखा है, उनसे पूछिये कि वे कुदरत की क्या कमाल थीं। भारत और भारत की नारी की वह शान थीं। योगियों में वे सर्व महान् थीं।

धर्म–दर्शन–मज़हब और ईमान थीं। वह दिव्यगुणों की खान थीं। वह न होतीं तो कुछ भी न होता। वही तो प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा परमात्मा शिव का ईश्वरीय ज्ञान सुनकर सभी यज्ञ–वत्सों को समझाती थीं। वह तो उनके सामने ज्ञान एवं योग का नमूना थीं। सभी यज्ञ–वत्सों को संभालने के लिये वही तो निमित्त थीं। उन्हें प्रजापिता ब्रह्मा के समकक्ष स्थान पर बैठकर प्रतिदिन ज्ञान–वीणा वादन का अधिकार था।

एक पति ने अपनी पत्नि को पवित्रता के मुद्दे पर घर से निकाल दिया। उस व्यक्ति को यह समाचार मालूम हुआ कि मम्मा वहॉ आयी हुई है। वह सेन्टर पर पहुँचा और दरी यहॉ–वहॉ फैंकी, बल्ब तोड़ा, कुर्सियों को इधर–उधर फेंक दिया। काफ़ी अपना तमाश दिखाया, जोश दिखाया और झगड़ा भी किया। वह बोलने लगा, मम्मा कहॉ है?मम्मा से मेरी बात कराओ, आज मैं फैसला कराके ही जाऊँगा। बहनें तो डर गयी थीं कि वह झगड़ा करने आया है, हम कैसे उसको शांत करें। कोई भाई उस समय नहीं था। मम्मा सबसे ऊपर की मंजिल पर थी। जब वह व्यक्ति वहॉ गया तो मम्मा कुर्सी से उठी और चारपाई पर बैठ गयी। मम्मा ने उससे प्यार से कहा, "आओ बच्चे, आओ। बैठो, कैसे आये हो?" मम्मा के इन शब्दों को सुनते ही वह पानी–पानी हो गया और सच्चे मन से मम्मा, मॉ कहने लगा। वह अपना प्रश्न ही भूल गया। केवल मॉ, मॉ, मॉ कहता रहा। मम्मा कहने लगी, "बोलो बच्चे, कैसे आना हुआ?" वह कहने लगा, कुछ नहीं मॉ कुछ नहीं।

ॐ शांतिः बी. के. गोदावरी बहन जी (मुलुंड, मुंबई)

मातेश्वरी हम सबकी हृदयेश्वरी थी

राजयोगिनी दादी गुलजारजी (दादी हृदयमोहिनी जी)

मीठी मम्मा जिन्हें हम मातेश्वरी कहते थे, हम सबकी हृदयेश्वरी थी। मातेश्वरी जी का नव विश्व की संरचना में कुशल प्रबन्धन अद्‌भुत और अद्वितीय था। मम्मा ने इतनी कन्याओं को जहाँ मातृ स्वरुप में पालना दी, वहीं पर उनकी परिवर्तन–शैली में भी निपुणता थी। मम्मा देखती थी कि भूल हो गयी है, यह कन्या सम्मुख आने में हिचक रही है और वह हिचक शर्मिन्दगी के कारण है तो मम्मा का प्यार वात्सल्यमय सम्बोधन में जाग उठता। ऐसे में यज्ञवत्सों को बुलाकर उनकी भूल बताती तो उन्हें भी वो कमज़ोरी तिनके के समान लगती। सामने वाला भूल स्वीकार कर सदैव के लिये उसे सुधार लेता था, दिल दर्पण स्वच्छ हो जाता था।

भारत की नारी की वह शान थी

वह मम्मा से इतना प्रभावित हुआ की वह शान्ति और आनंद की अनुभूति में खो गया। फिर उसने मम्मा से कहा, "मम्मा, फिर मैं कभी आऊँगा।" ऐसे कहकर वह चला गया। मम्मा ने उससे यह नहीं पूछा – तुम कौन हो, कहाँ से आये हो, किससे पूछकर अन्दर आये? बहुत प्यार से उससे बात की, उसको सम्मान दिया। उसका मन परिवर्तित हो गया।

ॐ शांति : बी. के. मीरा बहन जी (सांताक्रुज, मुंबई)

इतना वैराग था मम्मा का इस पुरानी दुनिया और दुनियावी वस्तुओं से

राजयोगी ब्रह्माकुमार भ्राता निर्वैर जी

भौतिक विद्या, विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में मिल जाती है परन्तु तत्व ज्ञान या सत्य आध्यात्मिक ज्ञान रुपी विद्या के दाता परमपिता परमात्मा हैं। ब्रह्मा के साकारी तन का आधार लेकर जब वे अवतरित हुए तो विद्या की देवी मॉ सरस्वती ने उन्हें यथार्थ रुप में, तुरन्त पहचान लिया और सम्पूर्ण ज्ञान को धारण कर जीवन को दिव्यगुण सम्पन्न बना लिया।

प्रथम प्रदर्शनी के चित्र सन् 1964 में तैयार हो रहे थें। मुंबई में एक बार हम कार में जा रहे थें। रास्ते में इलेक्ट्रॉनिक विज्ञापन का बोर्ड लगा हुआ था। रमेश भाई और हमारे बीच में बातचीत हो रही थीं कि हम भी ऐसा ज्ञानयुक्त चित्र बनायें प्रदर्शनी के लिये। इसके बारे में हमने मम्मा से पूछा, ''मम्मा, वह चित्र आपको कैसा लगा?'' मम्मा ने तब हमें ऐसा उत्तर दिया कि वह हमारे संकल्प और सपने में भी नही था। मम्मा ने कहा, ''जिस समय मम्मा क्लास में होती है उस समय ही सामने दृष्टि डालती है, नहीं तो मम्मा के लिये इस दुनिया का कोई अस्तित्व नहीं है।''

इतना वैराग था मम्मा का इस पुरानी दुनिया
और दुनियावी वस्तुओं से।

मम्मा का स्व-पुरूषार्थ

ब्रह्माकुमार भ्राता ओम् प्रकाश जी

हमने देहली में देखा कि मम्मा रात को बाबा की मुरली टेप द्वारा सुनकर, चिन्तन मंथन करके, पहले खुद उसको अपने में समाकर, फिर उसको सरल बनाकर बच्चों को सुनाती थी। मम्मा के समझाने पर हर वत्स यही समझता था कि यह ज्ञान–बिन्दु मेरे लिये ही है, इसे मुझे धारण करना ही है। इस प्रकार मम्मा की वाणी सरल और सहज होती थी।

ॐ शांति : बी. के. नेहा बहन जी (गांमदेवी, मुंबई)

प्यार हम नहीं देंगे तो और कौन देंगे?

ब्रह्मा कुमार भ्राता रमेश शाह जी

मैनें एक बार मम्मा से पूछा, "मम्मा, आपके पास जो भी आता है, अपने कष्ट आदि सुनाता है या दूसरों की कमी–कमजोरियों के बारे में सुनाता है, कोई अच्छी बात सुनाने तो आता ही नहीं।" मम्मा ने कहा, "यह बात सच है।" फिर मैनें कहा, "ऐसे कोई हमें सुनाते हैं तो उसका प्रभाव हमारे ऊपर पड़ता है और उस व्यक्ति को उसी दृष्टि से देखना शुरु करते हैं, तो आप के ऊपर ऐसा प्रभाव नहीं होता?" मम्मा ने कहा, मैं समझती हूँ कि हरेक पुरुषार्थी है। हरेक पुरुषार्थ करके अपने को बदलने का, आगे बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है। प्रयत्न करते–करते कई आगे बढ़ते हैं, कई फेल हो जाते हैं, कई धीरे–धीरे चलते हैं, कई रुक जाते हैं। मम्मा यह भी जानती है कि यह एक स्कूल है। स्कूल में सब तरह के विद्यार्थी होते हैं–कोई तेज़, कोई कमजोर। परीक्षा में सब पहले नंबर में तो पास नहीं होते। कोई पहला, कोई दूसरा, कोई तीसरा, कोई नापास भी होते हैं। हमें इस बात का भी निश्चय है कि राजधानी स्थापन हो रही है,

राजधानी के जो भी वर्ग हैं सब यहीं से बनने हैं और हरेक उस पद के आधार से बने संस्कार अनुसार यहाँ अपना पुरुषार्थ करते हैं। इसलिये कोई किसी के बारे में कुछ भी कहे लेकिन मैं किसी के अवगुण अथवा कमियों को अपने चित्त पर नहीं रखती। उस बच्चे के बारे में मै अपने में नकारात्मक भाव का निर्माण कभी नहीं करती। जो बच्चा सुनाने आया है उसके प्रति भी और जिसके बारे में सुना रहा है उसके प्रति भी मेरे मन में कल्याण एवं स्नेह की भावना रहती है। सबको आगे बढ़ाने की शुभ–भावना ही रहती है। दोनों के प्रति मैं स्नेह और रिगार्ड दिखाती हूँ। क्योंकि उनको हम प्यार न देंगे तो और कौन देगा?"

ॐ शांति : बी. के. सोम प्रभा बहन जी (उल्लासनगर, मुंबई)

संस्कार, स्वभाव और कर्तव्य की शक्ति

ब्रह्मकुमार भ्राता बृजमोहन जी

लौकिक माता को अपनी ही लौकिक बच्ची को अपनी 'अलौकिक मॉ' के संबंध से और मम्मा को उसके साथ 'अलौकिक बच्ची' के संबंध में व्यवहार करते देखा, तो देखता ही रह गया। पहली बार जब मैंने इस दृश्य को देखा तो मेरे रोंगटे खड़े हो गये थे। मम्मा के सामने उनकी लौकिक माता वृद्धा होने के बावजूद भी सचमुच उनकी बच्ची के समान ही लग रही थीं। किस प्रकार संस्कार, स्वभाव और कर्त्तव्य के बदल जाने से मनुष्यता का सारा वातावरण तथा उसके सारे संबंध ही बदल जाते हैं, इस सत्यता की छाप मुझ पर उसी घड़ी लग गयी थी। हम बच्चे जब भी मम्मा से, ''प्रेम में नेम (नियम) नहीं' की उक्ति के अनुसार, कोई ऐसा कार्य करने को कहते जिससे हमारा अलबेलापन दिखाई देता हो, तो वह हमें बहुत ही मीठे ढंग से कर्मो की गुह्य गति के बारे में सावधान कर देती थीं।

क्या आप सुख शांति समृद्धि पत्रिका के शुभेच्छक बनना चाहते है?

ओम्शान्ति, प्रणाम। हम अपनी मर्यादाओं की वजह से आप सब तक नही पहुंच पा रहे है। अगर आप सेवा के भाव से पत्रिका के शुभेच्छक बनकर आपके आसपास के भाई बहनों तक पत्रिका पहुंचाने में सहयोगी बनना चाहते है तो कृपया संपर्क करें। आभार।

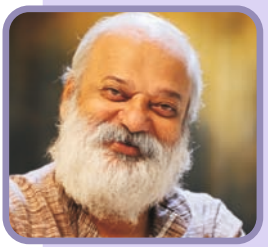

मोबाईल : 09324446487

ई–मेल – jitusompura@yahoo.co.in

जीतु सोमपुरा

संपादक : सुख शांति समृद्धि पत्रिका

ॐ शांति : बी. के. अलका बहन जी (कल्याण, मुंबई)

ऊँचाई तक पहुँचाने वाली ऊँची शिक्षाये

ब्रह्माकुमार भ्राता महेन्द्रजी

मैंने एक बार मातेश्वरी जी से प्रश्न किया, आप को इतनी ऊँचाई तक पहुँचने में किन विशेष बातों का ध्यान रखना पड़ा? उन्होंने प्रत्युत्तर में तीन बातें बतायी :

1. मेरा निश्चय शिव बाबा तथा ब्रह्मा बाबा में सदा अचल, अटल और दृढ़ रहा है। मैं बाबा की आज्ञाकारी, वफ़ादार रही और हॉ जी का पाठ पक्का किया। बाबा ने जो कहा उसको करना ही है, चाहे कुछ भी हो जाये।

2. मैनें कभी भी बाबा की मुरली (ईश्वरीय ज्ञान श्रवण) मिस नहीं की, चाहे कितनी भी व्यस्त क्यों न रही हूँ, बीच में समय निकाल कर अवश्य पढ़ती और चिन्तन करती हूँ।

3. मैं किसी भी परिस्थिति में कभी रोयी नहीं, भले ही यज्ञ में भाव–स्वभाव, संस्कार, विघ्नों की अनेक बातें आयीं। मैं मन से और ऑखों से कभी भी नहीं रोयी क्योंकि रोने से सहनशक्ति घटती है।

ममतामयी माँ ने देवीगुणों से श्रृंगारा

राजयोगी ब्रह्माकुमार भ्राता आत्मप्रकाश जी

यज्ञमाता जगदम्बा सरस्वती कुमारी कन्या होते हुए भी 350 से अधिक यज्ञवत्सों तथा हजारों ब्रह्मावत्सों की ममतामयी मॉ बन कर उनको पाला, पोषा और ज्ञान–योग से संवारा, दैवीगुणों से श्रृंगारा।

ॐ शांति : बी. के. मालती बहन जी (घोडबदेव, मुंबई)

भाव वंदना के पुष्प

विशेष आभार

कुछ माह पूर्व हृदय की बीमारी की वजह से हम जीवन के उस नाजुक दौर में पहूंच गये थें जहाँ मानसिक, शारीरिक, आर्थिक तकलीफों के अलावा कुछ नजर नहीं आता था, उस वक्त परमात्मा के यह चार फरिश्तों ने हमें जीने के काबिल बनाया। इसलिये हम इनके आभारी है। परमात्मा इन सबके जीवन के सपनें पूर्ण करें और उनका जीवन सुख शांति समृद्धिमय हो ऐसी शुभकामनायें...

संपादक जीतु सोमपुरा

डॉ. अरुण यू. महाजन

वरिष्ठ कार्डियोलॉजिस्ट
प्रोफेसर, डिर्पाटमेन्ट
ऑफ कार्डियोलॉजी
एल. टी. एम. एम. कॉलेज
जनरल हॉस्पिटल, सायन

डॉ. सतीश कुमार गुप्ता

सीनियर कन्सल्टन्ट, कार्डियोलॉजी
मेडिसीन प्रिन्सीपल इन्वेस्टीगेटर
केड प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर
आर. एम. एम. ग्लोबल हॉस्पिटल
ट्रोमा सेन्टर आबूरोड़

ब्रह्माकुमारी बाला बहन

शांतिवन – आबूरोड़

ब्रह्माकुमारी गीता बहन

डोंबीवली – सायन

ॐ शांति : बी. के. मोहिनी बहन जी (कोलाबा, मुंबई)

बच्ची, मम्मा के हर कर्म का निरिक्षण करो

ब्रह्माकुमारी उषा बहन जी

एक दिन मैं नाश्ता कर रही थी। सामने से मम्मा आ रही थी। मैं ने देखा तो देखती ही रह गई। मैं अपने आपको भूल गयी। जैसे–जैसे मम्मा नज़दीक आती गयी तो मुझे महसूस होने लगा कि कोई शीतल हवा का झोंका मेरी तरफ आ रहा है। मम्मा मेंरे नज़दीक से गुजर कर किचन की तरफ गयी। वहॉ किसी बहन को कुछ सेवा का डायरेक्शन दे रही थी। डायरेक्शन देने का तरीका ऐसा था कि वे धीरे से उनके कान के पास जाकर बोल रही थी। पॉच दस मिनट वहॉ उनको जो कहना था कहकर धीरे–धीरे जा रही थीं। उनका चलना तथा दूसरों के साथ बात करने की विधि देखने लायक और सीखने लायक थी। तब मुझे एहसास हुआ कि बाबा ने इसी लिए मुझे कहा था कि बच्ची, मम्मा के हर कर्म का निरिक्षण करना।

मिनिस्टर और अमृतवेला

ब्रह्माकुमारी डॉ. निर्मला बहन जी :

एक बार मुंबई में एक मंत्री जी मम्मा से मिलने आये। मंत्री जी के जाते–जाते रात के बारह बज गये। उन दिनों मम्मा रमेश भाई शाह के घर में रहती थी। तब रमेश भाई ने पूछा, मम्मा, आप तो करीब एक बजे सोयी होंगी फिर आप अपने समय पर इतनी जल्दी उठ गयी?तब मम्मा ने कहा, देखो मिनिस्टर की अपॉइन्टमेंट के कारण मैं रात को जाग सकती हूँ तो सवेरे अमृतवेले मेरी अपॉइन्टमेंट हमारे पियू के साथ होती है, यह हम कैसे मिस कर सकते हैं? इस प्रकार, मम्मा ने कभी अमृतवेला मिस नही किया।

ॐ शांति : बी. के. कुमुद बहन जी (भूलेश्वर, मुंबई)

शिक्षा को मान दो, सम्मान से स्वीकारो

ब्रह्माकुमारी सरला बहन जी

एक बार वहॉ क्लास में मम्मा ने सुनाया कि एक–दूसरे को जोर से आवाज देकर नहीं बुलाना चाहिए, उस व्यक्ति के नज़दीक जाकर कहो, आपसे हमें कुछ बात करनी है, आप आओ। इस प्रकार शान्ति से, प्रेम से और धीमें स्वर से बोलना चाहिए। मम्मा कहती थी कि आप देवता बनते हो, देवता कभी ज़ोर–ज़ोर से हंसते नहीं, बोलते नहीं और चलते नहीं। सब कुछ धीमें से , शान्ति से करते हैं। अतः आपको भी ऐसे ही चलना चाहिए। मम्मा कहती थी कि अगर कोई आपको शिक्षा देता है तो उसको प्यार या संयम से सुनना चाहिए कि यह ऐसा नहीं, वैसा नहीं, मैंने किया ही नही। हो सकता है कि वह बात अभी लागु नहीं होती हो, शायद भविष्य में काम आने वाली हो। इसलिये शिक्षा को मान देना चाहिए उसे सम्मान से स्वीकार भी करना चाहिए।

बुद्धि के बन्द नेत्र खुले तब जीवन को सही मंजिल मिले

ब्रह्माकुमारी नलिनी बहन जी

मेरी लौकिक मॉ मुझे प्रथम बार मम्मा की गोदी मे बिठाने ले गयी तब कुछ ही क्षणों में मधुर, मंजुल स्वर कानों में पड़ा और मैं हर मधुर स्वर का जागृत दशा की बेहोशी में जवाब देती गयी और आखिर जब यह प्रश्न उस मुखकमल से निकला, ''तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है?'' जवाब था ''खाना, पीना और मौज़ करना।'' मीठी मॉ का प्यार भरी दृष्टि से देखना, मन्द–मन्द मुस्कुराना। अपना जीवन देवता जैसा दिव्य, श्रेष्ठ व आदर्श कैसे बनाये–उस विषय पर करीबन एक घंटा समझाया और अज्ञानता की गहरी निद्रा में जो बुद्धि का नेत्र बन्द था उसे खोला। अपनी मन्द, मधुर, शक्तिवर्धक मुस्कुराहट द्वारा ऐसी शक्तियॉ भर दीं जिससे जीवन को सही दिशा मिली, जीवन को सही मंजिल मिली।

ॐ शांति : बी. के. रुकमणी बहन जी (नेपीयन्सी रोड़, मुंबई)

स्थूल के साथ सुक्ष्म आध्यात्मिक पालना

ब्रह्माकुमारी गोदावरी बहन

मातेश्वरी जी का यज्ञ से बहुत स्नेह था। वे कहा करती थीं कि यज्ञ की कोई चीज बेकार नहीं जानी चाहिए। एक बार की बात है कि यज्ञवत्स गेहूँ साफ़ करके बोरी में भर चुके थे। कुछ गेहूँ इधर–उधर बिखरे हुए थें। मातेश्वरी जी ने ध्यान दिलाते हुए बड़े ही स्नेह से कहा कि एक–एक गेहूँ का दाना एक–एक मोहर के बराबर है। वे यज्ञ की एक–एक चीज़ की कीमत जानती थीं एवं बतलाती भी थीं। वे कुशल प्रबन्धक थीं। यज्ञवत्सों की स्थूल के साथ सूक्ष्म आध्यात्मिक पालना पर भी उनका विशेष ध्यान रहता था।

विशेष आभार

सलाहकार संपादक

भाव वंदना के पुष्प

सुख शांति समृद्धि पत्रिका ने अपनी विशिष्ठ ब्रह्माकुमारी श्रेणी के अंतर्गत पत्रिका को एक नया आकार दिया है। ब्रह्माकुमार भ्राता राजयोगी श्री करुणा जी के आशीर्वाद और सहयोग की वजह से ही आप तक पत्रिका पहुंचती रही है और पहुंचेगी। समग्र पत्रिका परिवार उन्हें वंदन करता है।

ॐ शांति : बी. के. भ्राता विनोद जी जैन (आबू)

पुरूषार्थ में अलबेले लोगों को माया खींचकर पुरानी दुनिया में लाती है

ब्रह्माकुमारी प्रेमलता बहन जी

एक बार मम्मा ने मुस्कुराते हुए कहा, प्रेम, तुम्हारी बुद्धि बहुत अच्छी है, जल्दी सही निर्णय करती हो। मुझे कुछ समझ में नहीं आया कि मम्मा आज ऐसे क्यों कह रही है। पहले तो मम्मा ने कभी ऐसे नहीं कहा। मैंने मम्मा से पूछा, मम्मा, आज आप मुझे ऐसे क्यों कह रही हो, क्या मुझसे कोई भूल हुई है? तब मम्मा ने पलंग डालने वाली घटना पर बड़े ही प्यार से मुझे समझाया और कहा कि जैसे बाबा कहते हैं कि पहले दूसरे की बात को सम्मान दो, फिर उसमें जो कमी हो, वह बता दो तो उसे बुरा नहीं लगेगा। उस समय मेरी लगभग 17 वर्ष की उम्र थी। मम्मा ने बड़े प्यार से कहा कि तुम्हारी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण है और निर्णय भी ठीक लेती हो परन्तु जब बाबा खड़े थे और कह रहे थे कि इस पलंग को ऐसे डालो तो हमारा काम है डालना। जब वह नहीं आयेगा तो बाबा स्वयं ही कहेंगे कि निकाल दो, तो निकाल देंगे। फिर भी मुझे समझ में नहीं आया। मैंने मम्मा से कहा कि आप स्पष्ट बताओ कि मेरी क्या भूल थी। तब मम्मा ने कहा, देखो, इसी प्रकार बुद्धि को चलाने और बोलने का अभ्यास रहेगा तो आगे चल ऐसी स्थिति आ सकती है जो तुम्हें अपनी बुद्धि का अभिमान आ जाये कि देखो मेरी बुद्धि कितना ठीक निर्णय देती है।

तब यह बुद्धि दिव्य बुद्धि नहीं बन सकेगी। बाबा की हर आज्ञा का पालन करने से ही बुद्धि दिव्य बन सकती है। उस घड़ी से लेकर मैंने भी यह संकल्प किया कि बाबा जो कहेंगे बिना अपनी बुद्धि चलाये उसे जीवन में धारण करुँगी। इस घटना ने मेरे सोचने के तरीक़े को ही बदल दिया। मैंने कई बार यह अनुभव किया कि मम्मा से प्राप्त इस संस्कार के कारण हर परिस्थिति में पुरुषार्थ के मार्ग पर मैं सरल और सन्तुष्ट रही।

ॐ शांति : बी. के. राधा बहन जी (गोरेगांव, मुंबई)

झूठा श्रृंगार छोड़ सच्चा श्रृंगार अपनाया

ब्रह्माकुमारी सन्तोष बहन

एक बार हैदराबाद में एक आफिसर ब्रहमा बाबा से मिलने आया था क्योंकि लोगो के मन में ग़लत धारणायें थीं कि बाबा माताओं–कन्याओं का घर–बार छुड़ाते हैं, जादू करते हैं आदि–आदि। तो बाबा उस ऑफिसर को समझा रहे थे कि देखों मैं इन बच्चियों को क्या देता हूँ? ना गहने देता श्रृंगार के लिए, ना अच्छे कपड़े देता हूँ। इनको गहने और कपड़ो से भी उँचा श्रृंगार ज्ञान–श्रृंगार मिलता है जिससे इन्हें आत्मिक सुख मिलता है जिस कारण ही ये भौतिक सुखों को त्याग कर आत्मिक सुख की ओर भागती हैं। यह वार्तालाप मम्मा और बृजइन्द्रा दादी ने बाहर बगीचे में टहलते हुए सुना। मम्मा, बृजइन्द्रा दादी को कहने लगी कि देखो, बाबा हमारे लिये क्या कहता हैं। परन्तु हमने गहने पहने हुए थे और बृजइन्द्रा दादी को तो बाबा ने लौकिक जीवन में बहुत श्रृंगारा था। मम्मा की यह बात सुनकर बृजइन्द्रा दादी ने कहा कि हमारे इन झूठे गहनों से बाबा के बोल झूठे लगेंगे क्योंकि हमने गहने पहने हैं और बाबा कहते हैं कि ये झूठा श्रृंगार छोड़ सच्चा श्रृंगार करती हैं। अब क्या किया जाय? तो मम्मा ने कहा, चलो हम दोनों ये झूठे गहने उतार देती हैं। तो उन दोनों ने तुरन्त ही गहने उतार दिये। उन्हें देखकर सारे यज्ञ–वत्सों ने अपने सब गहनों का स्वयं ही त्याग कर दिया। मतलब यह है कि मम्मा सदैव बाबा के महावाक्यों को साकार करने में नम्बर वन रही।

ॐ शांति : बी. के. कुंती बहन जी (मलाड़, मुंबई)

शिक्षा देने की निराली पद्धति

ब्रह्माकुमारी उत्तरा बहन

मम्मा की शिक्षा देने की विधि बहुत ही निराली थी। अगर कोई ग़लती करता था तो मम्मा सदा उसको इशारे से, प्यार से समझा देती थी। एक बार हम कई कन्यायें मम्मा के सामने बैठी थीं, उस समय मम्मा ने सबसे पूछा, तुम्हारे में कोई बाज़ार की चीजें खाती हैं, तब हरेक ने अपनी–अपनी बातें बता दी। तब मम्मा ने प्यार से समझाया कि देखो तुम किसकी सन्तान हो! श्रेष्ठातिश्रेष्ठ परम पिता परमात्मा की सन्तान हो! साधारण बच्चे नहीं हो। उस दिन से हम लोगों में धारणा इतनी पक्की हो गयी कि हमने कभी बाजार की वस्तु खायी ही नहीं।

तंदरूस्ती का कारण ईश्वरीय नशा–योगबल

ब्रह्माकुमारी सुदेश बहन

मम्मा को देखकर मुझे लगा कि ये बहुत अच्छे–अच्छे भोजन और ज्यादा से ज्यादा भोजन करती होंगी। जब एक दिन में अपनी लौकिक माँ के साथ मातेश्वरी जी को भोजन करते हुए देखा तो मैं अवाक् रह गयी। क्योंकि मम्मा एक दम साधारण भोजन स्वीकार कर रही थी जो उबला हुआ और बिना नमक, मिर्च, मसाले वाला था। वे बहुत थोड़ा ही भोजन स्वीकार करती थीं। मुझे अनुभव हुआ कि उनकी तंदरुस्ती का मूल कारण था ईश्वरीय नशा और योगबल।

सदा बाप को देखो, आप स्वयं को देखों

ब्रह्माकुमारी दादी आत्मइन्द्रा जी

मम्मा क्षमा का प्रतिरुप थी। यज्ञ की व्यवस्था से संबंधित यदि कोई भी शिकायत लेकर आता था तो मम्मा सामने वाले को समझाती थी कि आप के प्रति अमुक व्यक्ति के दिल में कोई भाव नहीं है, आपके दिल में भाव है तो उसे निकाल दो। मम्मा टूटे दिलों को जोड़ती थी। मम्मा हम बच्चों को सदा कहा करती थी कि सदा विचार ऊँचे रखो तो बाप समान बन जायेंगे। सदा बाप को देखो। आप स्वयं को देखो, किसी अन्य को नहीं देखो। बाबा व ड्रामा पर निश्चय रखो तो कर्मातीत बन जायेंगे।

ॐ शांति : बी. के. शकु बहन जी (डोंबीवली, मुंबई)

शिव बाबा का ज्ञान हमारा भोजन है

ब्रह्माकुमार भ्राता अमींचंद जी

आबू से साकार बाबा के मातेश्वरी के लिये दो पत्र आये थें। उस पत्र में शिव बाबा के महावाक्यों की प्वांइट्स और साथ में साकार बाबा का कारोबार का पत्र भी था। मातेश्वरी जी ने पहले शिव बाबा के महावाक्य पढ़े फिर बाद में साकार बाबा का कारोबार सम्बन्धी पत्र पढ़ा। उस समय दादी मनोहर इन्द्रा जी वहॉ थीं, उन्होंने मातेश्वरी जी से पूछा, ''मम्मा, आपने पहले पत्र पढ़ने की बजाय ज्ञान–बिन्दुओं को ही क्यों पढ़ा?'' तब मातेश्वरी जी ने कहा, ''हमारे जीवन का आधार ही है शिव बाबा का ज्ञान। यह हमारा भोजन है। मुझे इसकी बहुत प्रतीक्षा रहती है। आते ही पहले इसी को पढ़ती हूँ। कारोबार के समाचार बाद में पढ़ कर जो करना है उसको करती हूँ।'' इस प्रकार, ज्ञान की अथॉरिटी और ज्ञान की देवी होते हूए भी मातेश्वरी जी में ईश्वरीय ज्ञान–पिपासा सदा रहती है। वे मैंने देखा कि मातेश्वरी जी का ध्यान निजी पुरुषार्थ पर बहुत रहता था। सदा उनके मुख से यही शब्द निकलते थे कि ''जैसा कर्म हम करेंगे, हमे देख दूसरे भी करेंगे।''

परमात्मा से प्रार्थना

भाव वंदना के पुष्प

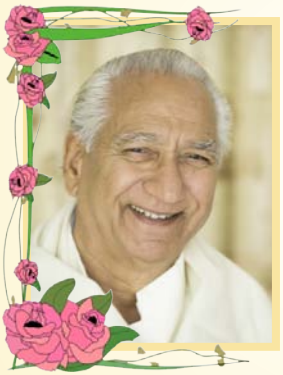

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अति वरिष्ठ भ्राता ब्रह्माकुमार राजयोगी श्री निर्वैर जी का स्वास्थ्य अच्छा है यह सुख शांति समृद्धि परिवार के लिये आनंद की बात है। पत्रिका परिवार परमात्मा से प्रार्थना करता है कि प्रभु निर्वैर भाई को पूर्णरुप से स्वस्थ करें।

ऊँ शांति : बी. के. भ्राता ड़ॉ. श्रीमंत जी शाहु (आबू)

कही भी जाओ; मन, वचन, कर्म एक ही जैसा हो

ब्रह्माकुमारी रानी बहन जी

एक बार हमारे रिश्तेदारों ने कहा कि तुम सभी सदा एक ही जैसे सफेद कपड़े पहनते हो, यह ठीक नहीं है। जब लौकिक में जाते हो तो लौकिक वालों जैसे रहना चाहिए और सत्संग में जाते हो तो सत्संग वालों जैसे रहना चाहिए। मैंने मातेश्वरी जी से सारी बातें कही तो उन्होंने कहा, "बच्ची, तुम सच्चे बाप के सच्चे बच्चे हो, तुम बच्चों का रुप बदल नहीं सकता। कैसा भी वातवरण हो तुम्हारे वस्त्र सफेद ही रहेंगे, तुम कहीं भी जाओ तुम्हारा मन, वचन और कर्म एक ही जैसा रहना चाहिए। वे तो सांसारिक मनुष्य हैं, मायावी रंग में रंगे हुए हैं इसलिये हर रोज़ अनेक रुप बदलते रहते हैं। तुम्हे किसी के प्रभाव में नहीं आना है, सदा एक बाप के संग में रहना है।"

पाँच तत्वों को भी दुःख नहीं देना

ब्रह्माकुमारी कमला बहन जी

मम्मा सदा कहा करती थीं सदा सबको सुख दिया करो। पॉच तत्वों को भी दुःख नहीं देना। अगर कोई जोर–जोर से चप्पल से आवाज़ करते हुए चलता है तो मम्मा कहती थी कि धीमे–धीमे चला करो, धरती को भी कष्ट नहीं देना। तत्वों को भी तुम सुख दो ताकि ये तत्व भी तुम्हें सुख दे।

प्रेम के आँसू है तो मोती बनेंगे

ब्रह्माकुमारी शुक्ला बहन जी

बाबा सदा कहते थे कि मम्मा इतनी पक्की पिड्डी है कि एक शिव बाबा को ही दिलवर बनाया है, और किस को भी दिल की बात नहीं सुनाती। जब भी मम्मा किसी जगह से विदाई लेती थी तो सबकी ऑखे नम हो जाती थीं पर मम्मा इतनी पक्की थीं कि कभी भी उनकी ऑखों में ऑसू नही आते थे। मम्मा कहती थी, बहाओ ऑसू, कोई बात नहीं, लेकिन प्रेम के ऑसू हो। अगर प्रेम के ऑसू हैं, तो मोती बन जायेंगे।

ॐ शांति : बी. के. भ्राता अनिल जी (गांमदेवी, मुंबई)

मेरे कारण दूसरों की सेवा में अड़चन ना हो

ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन जी

सेवा के कार्य में विलंब होने की वजह से मैं भोजन करने देरी से पहूंची तो भोजन खिलाने वाली माता मेरा इन्तजार कर रही थी। फिर मम्मा ने मुझे बुलाया और कहा, मोहिनी आज से 15 दिन तक भोजन खिलाने की सेवा तुम करोगी। मैं चुप हो गयी और मम्मा का कहना मान लिया। उस दिन खाना खिलाने के लिए बैठी तो सबका खाना पूरा होने तक मेरी स्थिति खराब हो गयी। सबको खिलाने के बाद मुझे खाना पड़ा। उसके बाद सारे बर्तन सम्बन्धित स्थान पर पहूँचाना आदि करते मेरा हाल बेहाल हो गया। अगले दिन ही मैंने मम्मा से कहा, मम्मा, मेरे से यह सेवा नहीं होगी, मैं आगे से समय पर आकर भोजन करुंगी, देरी नही करुंगी। लेकिन मम्मा ने कहा, एक दिन में तुम इतना परेशान हो गयी?वो माता तो रोज़ ऐसी परिस्थिति का सामना करती है। वो कैसे कर रही थी? फिर मम्मा ने कहा, तुमको 15 दिन तो यह सेवा करनी ही पड़ेगी। इस प्रकार, मुझे मम्मा ने सेवा देकर अनुभव कराया कि एक की छोटी–सी भूल से कितनों को दिक्कत होती है और हरेक व्यक्ति अपना–अपना काम ठीक ढ़ंग से तथा ठीक समय पर करने से सेवा में सबको कितना सहयोग और सफलता मिलती है। उस दिन से मैंने यह धारणा बना ली कि मेरे कारण दूसरों की सेवा में अड़चन न हो और यह ध्यान मैं आज तक रखती आ रही हूँ।

शक्ति के फालतू खर्च से होगी कमजोरी

ब्रह्माकुमार भ्राता रामलखन जी

मम्मा की एक बात हमको बार बार याद आती है, मम्मा हमेशा कहती थी कि शक्ति जमा करने में आप लोग कितनी मेहनत करते हो और फालतू खर्च कितनी जल्दी कर लेते हो। फालतू बातों में शक्ति खर्च करके फिर उदास, कमजोर हो जाते हो। कमाई करने में इतना, टाइम नही देते लेकिन सारा दिन खर्चा ही खर्चा, फिर दिवाला हो जाता और जब कोई बात सामने आती है तो कहते बहुत मुश्किल है क्योंकि ताकत नहीं है।

ॐ शांति : बी. के. भ्राता हरीलाल जी (आबू)

मेरा तो एक शिव बाबा, दूसरा न कोई

ब्रह्माकुमार भ्राता सन्तराम जी

कलकत्ता में एक बड़ा अनाज का थोक मारवाड़ी व्यापारी आया जो सट्टे में बडे घाटे के कारण जीवन से हार कर जीवघात करने के विषय मे सोच रहा था। जब वह व्यक्ति मम्मा के सामने आया तो मम्मा ने उसे शक्तिशाली एवं रुहानी प्यार भरी दृष्टि दी तथा मुस्कुराकर बोली, ''बच्चे, यह जीवन तो हार–जीत का एक खेल है। इसमें कोई भी आत्मा सुख–दुःख, हार–जीत, मान–अपमान, स्तुति–निन्दा से अछूती हो ही नहीं सकती। शिवबाबा के ज्ञान को गहराई से समझो, योगाभ्यास करो, ट्रस्टी होकर कार्य व्यवहार करते रहो तो स्वतः ही सब ठीक हो जायेगा।'' वह मम्मा की यह मीठी लोरी सुनता जा रहा था तथा उसके नेत्रों से प्रेमाक्षु बह रहे थे। मम्मा ने पुनः मीठी रुहानी दृष्टि देकर उसके दिल की पीड़ा हर ली। उसके बाद मैं थोड़े दिन जब तक कलकत्ते में रहा वह नियमित क्लास में आता था। कुछ वर्ष पश्चात् जब मैं इलाहाबाद में कुम्भ के मेले की सेवा पर उपस्थित था तो एक दिन अचानक वही व्यक्ति अपनी कार से उतरकर आ गया एवं मुझे पुरानी स्मृति दिलायी। पुनः वह हर प्रकार से स्वस्थ, सम्पन्न तथा सुखी हो गया था एवं बार बार मीठी मम्मा के उन ढ़ांढ़स देने वाले शब्दों को याद कर रहा था जिन्होंने उसमें नया जीवन फूंक दिया था।

बाबा का प्यार सेवा करने से ही मिलेगा

ब्रह्माकुमारी अचल बहन जी

मम्मा एक बार बटाला में कन्याओं को समझा रही थी – ''शिव–शक्तियों को शक्ति रुप होकर रहना है। किसी के अवगुणों को चित्त पर नहीं रखना है। बीती बातों का चिन्तन नहीं करना है। आप को कभी भी सर्विस पर जाने के लिये 'ना' नही करनीं है। बाबा का प्यार, सेवा करने से ही ले सकेंगे।'' प्यारी मॉ की शिक्षाओं का प्रभाव कन्याओं पर इतना पड़ा कि सभी कन्यायें अलग–अलग सेवा–स्थानों पर चली गयीं।

ॐ शांति : बी. के. श्वेता बहन जी (आबू)

भगवान हमारा बन गया फिर डरना किससे?

ब्रह्माकुमारी दादी मनोहर इन्द्रा जी

मम्मा ने कभी हंसी–मजाक करके अथवा व्यर्थ बातें करके अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाया। मम्मा किसी का ध्यान अपनी तरफ़ आकर्षित होने नहीं देती थी। सदा उस मॉ–बाप की ओर ही इशारा करती थी। मम्मा में बहुत मधुरता थी तो निर्भयता भी उतनी ही थी। मम्मा कहा करती थी कि जीवन में जिस भगवान से डरना चाहिए वही हमारा बन गया, फिर डरना किससे? डरता वह है जो पाप कर्म करता है। हम तो श्रेष्ठ कर्म, सत्कर्म करने वाले हैं, ईश्वर की मत पर चलने वाले हैं तो हम डरें क्यों?

अलौकिक माँ के साथ-साथ लौकिक माँ भी

ब्रह्माकुमार भ्राता रामऋषि शुक्ल जी

सबसे बड़ी बात तो यह थी कि मॉ निजी मुलाक़ातो में ऐसी भासना देती थीं मानो वह अलौकिक मॉ के साथ–साथ लौकिक मॉ भी हों। वह ज्ञान तो समझाती ही थीं, गृहस्थ–व्यवहार सम्बन्धी उपयोगी शिक्षायें भी कुछ कम नहीं देती थीं। घर में कैसे रहो, लौकिक बच्चों को कैसे देखो, सम्बन्धियों से कैसे व्यवहार निभाओ।

साक्षीदृष्टा होकर कर्मेन्द्रियों से कार्य कराओ

ब्रह्माकुमारी दादी धैर्यमणि जी

योग कैसे करें– यह भी मम्मा ने हमें सिखया। मैंने एक बार मम्मा से पूछा कि "मम्मा, आप अभी गेहूँ साफ़ कर रही हैं, अभी आपका क्या संकल्प चल रहा है?" मम्मा ने कहा, "हम गेहूँ साफ़ नहीं कर रहे हैं, हम साक्षीदृष्टा होकर कर्मेन्द्रियों से साफ़ करा रहे है। मैं नहीं कर रही हूँ, करा रही हूँ।"

ॐ शांति : बी. के. भ्राता राकेश जी (आबू)

बाबा के महावाक्यों पर विश्वास रखें

ब्रह्माकुमारी दादी कुंज जी

एक बार मैनें मम्मा से कहा, "मम्मा देखो, बाबा ने आज इस प्वाइंट को बदल दिया। पहले कहता था, "मैं ज्योतिर्लिंगम् हूँ', अभी कहता है कि "मैं ज्योतिर्बिन्दु हूँ", यह क्या है?" तब मम्मा तपाक से बोली, "जब बाबा ने ज्योतिर्लिंगम् अथवा ज्योति स्वरुप बताया था तो तुमको साइज माप कर बताया था क्या कि कितना है?" यह बात बिल्कुल मम्मा नहीं सुन सकती थी कि बाबा ने प्वाइंट बदल दी। हमें कहा करती थी, "उस समय तुम छोटे थे, बिन्दु क्या है, नहीं समझ में आये, इसलिये बाबा अपना ओरिजनल (मूल) स्वरुप ज्योतिर्बिन्दु बता दिया। बाबा का असली रुप ज्योतिर्बिन्दु है, गुणों का वही सिन्धु है।"

कमजोर को सेवा का अवसर दो

यज्ञ में सेवा करते समय, एक बहन मुझे दी जाती थी। मुझे कहा जाता था कि उसको साथ लेकर सेवा पूरी करो। मैं मम्मा के पास जाकर कहती थी, "मम्मा वो बहुत ढीली–ढाली हैं, बहुत धीरे–धीरे काम करती है। मुझे फलानी दो ना! हम दोंनो मिलकर जल्दी पूरा करेंगे।" तब मम्मा कहा करती थी कि तुम कैसे जानती हो कि वह बहुत ढीली–ढाली है? मैं कहती थी, "मम्मा, मैं रोज देखती हूँ ना साथ मैं काम करते हूए।" मम्मा कहती थी, "देखो, हरेक में कोई–न–कोई कमी–कमजोरी होती है। मैं मॉ हूँ ना, मुझे सबको सेवा का अवसर देकर उनका भाग्य बनाना है। आज उसमें कमी है, तुम्हारे में जो कला है उसको देखते देखते कल जाकर वह अपनी कमी–कमजोरियों को भर देगी और एक दिन वह भी तुम्हारे जैसी होशियार बन जायेगी। इसीलिये सबको साथ में लेकर चलना है।" ऐसे हमें प्यार से समझा कर मम्मा शिक्षा देती थी।

ॐ शांति : बी. के. बसंती बहन जी (नासिक)

आगामी अंक : राजयोगिनी जानकी दादी जी विशेषांक

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की वर्तमान मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी के शताब्दी जन्म जयन्ति के उपलक्ष्य में सुख शांति समृद्धि परिवार ब्रह्माकुमार भ्राता राजयोगि श्री मृत्युंजय भाई के मार्गदर्शन में अगला विशेषांक प्रकाशित करेगा।

कोई भी सेवा के लिये कभी "ना" नहीं कहना

ब्रह्माकुमारी दादी भगवती जी

एक दिन मम्मा ने मुझे बुलाकर कहा, "भगवती, तुम कोट सिलाई करती हो?" मैनें कहा, "नहीं मम्मा मुझे कोट सिलाई नहीं आता।" तब मम्मा ने बोला, "देखों कभी 'ना' नहीं बोलना। इस ड्रामा में 'ना' है ही नहीं। 'हॉ' कहो, न आते हुए भी प्रयत्न करते–करते आ जायेगा।" इसी प्रकार कोशिश करते–करते कोट सिलाई करना आ ही गया। उस दिन से मैनें सेवा को 'ना' नहीं कहा, हर बात में "हॉ जी, हॉ जी" करने लगी। तभी से मुझे वरदान प्राप्त हुआ कि जो कार्य मैं करती हूँ उसमें सफलता मिलती ही रहती है।

ॐ शांति : बी. के. पुष्पा बहन जी (पंचवटी, नासिक)

मीठी माँ की सुनायी हुई अनमोल शिक्षायें

1 इस ज्ञान से सिर्फ अपना पेट नहीं भरना है लेकिन दुःखियों को भी शान्ति देने का उपाय करना है। यही सर्वोत्तम सेवा है।

2 परमपिता परमात्मा तो विश्व का रचयिता है। वो तो नयी दुनिया रचने का काम कर ही लेगा लेकिन तुम बच्चे स्वयं अनेक विकारो का विनाश और दैवी गुणों की रचना करों। जैसे किसी के शरीर पर कोई बोझ रखा हो तो वह जल्दी–जल्दी चल नहीं सकता, धीरे–धीरे चलेगा, इसी तरह, तुम बच्चों के सिर पर भी पापों के बोझ की बहुत भारी गठरी है। अगर तुम भी जल्दी–जल्दी उन्नति को पाना चाहते हो तो पहले पापों की गठरी उतारो अर्थात् आत्मा के पिछले पापों को दग्ध करो।

उनके साथ सर्व सम्बन्ध जोड़ पूरा हक़ जमाओ कि 21 जन्मों तक दैवी स्वराज्य प्राप्त कर के रहेंगे, ऐसा दृढ़ संकल्प अंदर में पक्का हो।

3 कोई आत्मा को घड़ी–घड़ी पास्ट जीवन की याद आती है जिस कारण वह खुश नहीं रहती। इसमें अपने अन्दर देखना है कि मुझे अब पुराने चौपड़े को खत्म कर नया चौपड़ा बनाना है। अगर नयो में पुराना संकल्प–विकल्प मिक्स करते रहेंगे तो तुम आत्माओं का न पुराना साफ होगा और न नया चौपड़ा बन सकेगा। इसलिये पुराने मायावी आत्माओं का नया ईश्वरीय जन्मा होगा तो सदा खुशी में रहो।

4 सर्विस करने का मतलब अपने जीवन को आदर्शमय जीवन बनाना है जिससे अन्य आत्माओं के ऊपर प्रभाव पड़ सके।

5 अब तुम सच्चे राम की सच्ची सीतायें बनी हो तो रावण की कोई भी निशानी अपने पास न रखो।

ॐ शांति : बी. के. मनोरमा बहन जी (इलाहाबाद)

ज्ञान से जन-जन का कल्याण करना है

ब्रह्माकुमारी मीरा बहन जी

ये उन दिनों की बात है जब बंबई मे मम्मा क्लास लेती थी और में हर रोज कॉलेज से क्लास में जाती थी। एक दिन मम्मा ने पूछा तुम मीरा हो,लेकिन किस की मीरा हो, पीले पीताम्बर वाले की मीरा हो या टाई शुट वाले की मीरा हो? तब मैं ने कहा मैं पीले पीताम्बर वाले की मीरा हूँ। यह सुनकर मम्मा में बेहद प्यार से दृष्टि देकर समझाते हुए ज्ञान की एक–एक बात को गहराई से स्पष्ट किया और कहा कि ज्ञान को जीवन में प्रेक्टिकल धारण करके दुर्लभ जीवन को सफल बनाये। ज्ञान से जन–जन का कल्याण करना है। तब से मम्मा का संदेश मेरे जीवन की ताकत बन गया है। हर रोज उमंग, उत्साह से वृद्धि हो रही है।

ईश्वरीय सेवा का बन्धन मधुर और श्रैष्ठ

ब्रह्माकुमारी पुष्पा बहन जी

मैं बहुत बांधेली थी एक बार छिपकर मम्मा से मिलने गई। मैने मम्मा से कहा, "मम्मा, मेरे बहुत कड़े बन्धन हैं, क्या करुं?" तब मम्मा ने कहा, "ईश्वरीय सेवा एक ऐसा मधुर और श्रैष्ठ बन्धन है जो सर्व स्थूल बन्धनों को काटकर फेंक देता है।" इस प्रकार, मम्मा ने मेरी ईश्वरीय सेवा में रुचि बढ़ायी और सर्व बन्धनों से मुक्त कर ईश्वरीय सेवा के लिये समर्पित होने का भाग्य भी बनाया। कचहरी में मम्मा, गलती किये हुए व्यक्ति को सजा नहीं देती थी अथवा डॉटती नहीं थी परन्तु यह ज़रुर कहती थी, "आगे के लिये ध्यान रखो और दुबारा ग़लती होने नही देना। अच्छा कर्म करों।" मम्मा यहॉ तक कोशिश करती थीं कि इनकी बात यहॉ तक ही रह जाये और बाबा तक भी न जाये।

ॐ शांति : बी. के. कृष्णा बहन जी (आबू)

विद्या की देवी परम विद्यार्थीनी

ब्रह्माकुमारी पुष्पा बहन जी

अन्तिम समय में मम्मा की शारीरिक स्थिति केन्सर की वजह से इतनी नाजुक थी कि एक मिनट भी ठीक से बैठना मुश्किल था परन्तु कहा जाता है ना कि योगी प्रकृतिजीत होते है। यह हमने मम्मा में प्रेक्टिकल देखा। वे प्रकृतिजीत थी। उन्होंने लास्ट दिन तक भी बाबा की मुरली मिस नहीं की, भले ही मम्मा क्लास में नहीं आ सकती थी। माइक का कनेक्शन कमरे में कर दिया गया था। अक्सर हम देखते है कि कोई बीमार रहता है तो बिस्तर पर लेटकर या सोकर मुरली सुनता है वा पढ़ता है लेकिन मम्मा ने कभी भी ऐसा नहीं किया। मम्मा कहती थी कि यह मुरली हमारी पढ़ाई है। यह पढ़ाई कौन पढ़ा रहा है?परम् शिक्षक, परमात्मा। इसलिये हमें ईश्वरीय पढ़ाई को विद्यार्थी के रुप में पढ़ना चाहिए। तो मम्मा बकायदा तैयार होकर, खटिया पर तकिये के सहारे बैठकर मुरली सुनती थी। तबीयत इतनी खराब रहने पर भी एक घण्टे तक मम्मा बैठकर ही मुरली सुनती थी। यह हम ईश्वरीय विद्यार्थियों के लिए एक महान् मिसाल है।

मम्मा शिव बाबा की थी और शिव बाबा के पास चली गयी

ब्रह्माकुमारी दादी सन्तरीजी

: जब केन्सर ग्रस्त मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद दो बहनें बाबा के पास आयीं। बाबा ने कहा, आ गयीं बच्ची। वे रोने लगीं तो बाबा ने कहा,''क्या तुम बाबा के सामने मम्मा का दुःख जताने आयी हो?तुम बाबा के सामने रो रही हो? रोते कौन हैं?विधवा। मम्मा तो तुम्हारी थी ही नहीं, वह शिव बाबा की थी और शिव बाबा के पास चली गयीं।''

ॐ शांति : बी. के. रुपा बहन जी (आबू)

भाव वंदना के पुष्प

हम आभारी है इस अंक के सहयोगी के

जो सतत पत्रिका परिवार के सदस्यो को प्रेम और विशेष सहयोग प्रदान कर रहें है।

ब्रह्माकुमारी माताजी
शरवती उपाध्याय जी

ब्रह्माकुमार भ्राता
अशोक कुमार उपाध्याय जी

ज्ञान पर आधारित अनेक कविताओं के रचयिता तथा ऑडियो सी डी के निर्माता (पाण्डव भुवन, माउन्ट आबू)

वर्ष : ३ हिन्दी मासिक विशेषांक मुंबई जूलाई २०१५ **संपादक जीतु सोमपुरा**
पृष्ठ ३२ विशेष मूल्य १० रुपये
सुख शांति समृद्धि हिन्दी मासिक समाचार पत्र, स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : जीतु सोमपूरा ने सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, गाला नं. ०७, उद्योग भवन, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, वालभट्ट रोड़, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई – ४०००६३ से मुद्रित कर ३२ – प्रेस एन्कलेव, ६३ – वैद्य नगर, दत्तानी स्कूल के सामने, टाटा पावर हाऊस, बोरीवली (पूर्व), मुंबई – ६६ महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक : जीतु सोमपुरा
मोबाईल : 09324446487 – ई–मेल – jitusompura@yahoo.co.in

ॐ शांति : गायक बी. के. भ्राता जय गोपाल जी लुथरा (चंढीगढ़)

सफल जीवन के पाँच सूत्र

ब्रह्माकुमारी विद्या बहन जी

एक दिन मम्मा ने पूछा – मुरली सुनते समय कैसी अवस्था रहती है?फिर समझाते हुए कहा–

1 देखो ब्रहमा बाबा के मुख द्वारा शिव बाबा सुनाते हैं, तो आपके कान तक आते–आते बीच में माया प्रवेश न हो। ध्यान रखना कि बाबा के मुख और तुम्हारे कान के बीच अन्तर है इसलिये सदा रुहानी स्थिति में स्थित होकर ही मुरली सुन्ना।

2 मम्मा ने कहा कि जीवन लिफाफे की तरह बन्द नहीं बल्कि पोस्टकार्ड की तरह सदा खुला होना चाहिए।

3 तीसरी शिक्षा माँ ने दी कि सदैव ''हाँ जी'' का पाठ पक्का करना। समझो कोई ने कोई कार्य सौंपा लेकिन आपको नहीं आता तो सीधा ना नहीं बोलना। ना माना नास्तिक। उससे यह पूछना कि ये कैसे होगा?यदि आप हमें तरीका बता देंगे तो वैसे हम कर लेंगे।

4 चौथी बात मम्मा ने समझायी कि कभी भी कोई बात हो तो उसका वातवरण नहीं बनाना यानि गंभीरता का गुण अपनाना।

5 पाँचवी बात मम्मा ने बताई कि अपनी मत को जीवन का ज़िम्मेवार नहीं बनाना। बाबा को जीवन दी है, उसे ही जिम्मेवार माना तो मदद मिलेगी। अपनी मत व ज़िम्मेवारी से बाप की मदद व शक्ति नहीं मिलेगी। इस प्रकार, मम्मा ने प्रथम गुरु बन मुझे कई अनमोल शिक्षायें दी।

RNI NO. : MAHHIN /2012 / 47712